LOTUS BUD

हिन्दी

प्रकृति

पहले प्रकृति ने हमें बताया,
फिर करोना के रूप में समझाया ।
न करो मझुसे छेड़कानी ,
नहीं तो तुम्हे होगी परेशानी ।

प्रकृति हो गई सुंदर,
जब हम सब थे घर के अदंर ।
आसमान था प्रदूषण से खली,
धरती पर छायी हरयाली ।

समुद्र ,नदियाँ और झरने,
सारे हो गए साफ़ ।
ऐसा लगा मानो ,
प्रकृति ने कर दिया हमें माफ़ ।

पेड़ों के पत्ते थे हरे,
हो गए फल-फूल से भरे ।
सूरज की कड़कती धूप ,
मानो प्रकृति का हो नया रूप ।

- रिविका बागरी
- कक्षा ८ए

सफलता की यात्रा

सुनीता नाम की एक लड़की कोलकाता शहर में रहती थी। उसके माता-पिता उससे बहुत नाराज़ थे। वह करती भी क्या थी? बस स्कूल जाती, कक्षा में बैठती, और जैसे-तैसे करके अपने परीक्षाओं में पास होती। सुनीता को तेरह की उम्र में भी अपनी पढ़ाई और भविष्य को लेकर कोई चिन्ता नहीं थी। स्कूल में भी उसे अच्छे अंक नहीं मिलते थे।

एक दिन आया जब वह स्कूल से घर लौटते ही उसके पिता जी ने उसे अपने कमरे में बुलाया। सुनीता को वह बोलने लगे, "सुनीता, तुम्हें कौन-सा विषय सबसे अच्छा लगता हैं?"

"पता नहीं बाबा। अभी तो मेरा कोई पसंदिता विषय नहीं है, " सुनीता बोली।

"पुत्री, तुम्हें पता हैं कि आज के दिन में जितने भी बड़े एवं प्रसिद्ध लोग हैं, सब अपना रक्त त्याग कर कष्ट से बड़े हुए हैं। तुम्हारे पास ढंग का घर है, रहने के लिए अच्छा खाना हैं, परन्तु उन लोगों के पास यह भी नहीं था। तुम, आज से सुबह उठकर स्कूल में जाकर अपने कक्षाओ में ध्यान से पढ़ाई करना और घर आकर मुझे बताना कि हर एक क्लास में तुमने क्या सीखा।

पुरे समय तक सुनीता मन लगाकर बातों को सुनी।

अगले दिन से वह पूरा ध्यान देकर अपनी कक्षाओं को सुनती थी। कुछ महीनो में सुनीता अपनी पढ़ाई, खेल-कूद और सब में प्रथम आने लगी। सुनीता खूब खुश हुई और उसे अपने पर गर्व हुआ।

- आईशिकी कौर
  कक्षा ९ए

लैंगिक समानता

लैंगिक समानता आज के समय का प्रमुख विषय है। लैंगिक समानता का अर्थ है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए क्योंकि यह समाज के ऐतिहासिक और सामाजिक नुकसान के कारण है। पितृसत्तात्मक सोच को अब खत्म करने की ज़रूरत है।
इस समाज में लड़के और लड़कियों, दोनों को तरह-तरह की असमानताओं का सामना करना पड़ता है। उनके जीवन के हर कदम पर चनौतियाँ हैं। लड़कों को बचपन से ही सिखाया जाता है कि बड़े होकर उन्हें अपने परिवार का नाम रोशन करना है। दूसरी ओर, लड़कियों को घर के कामों में दिलचस्पी लेने के लिए कहा जाता है। लड़कों पर घर की ज़िम्मेदारी होती है और लड़कियों पर घर की इज़्ज़त बनाए रखने की ज़िम्मेदारी। अगर लड़का या लड़की इसका उल्टा करते हैं तो उनका समाज में रहना मुश्किल हो जाता है और लोग उन्हें अलग नजर से देखने लगते हैं।
कुछ जगहों पर आज भी लड़के-लड़कियों की शादी बचपन में ही कर दी जाती है। कम उम्र में माँ बनने की वजह से लड़कियों को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है और कई बार तो उनकी जान भी चली जाती है। लड़के अक्सर बालश्रम का शिकार होते है, लड़कियों को भी बालश्रम के लिए भेजा जाता है। इन समस्याओं का समाधान यही है कि हमें बाल विवाह को पूरी तरह से रोकना होगा। इसके बारे में लोगों को सूचित करना अनिवार्य है।
बच्चों को शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए।
स्त्री और पुरुष दोनों के लिए लैंगिक समानता आवश्यक है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन, अपने ढंग से जीने का अधिकार है। भारत में पर्णू लैंगिक समानता के लिए पुरुषों और महिलाओं, दोनों को सकारात्मक बदलाव लाने होंगे।

- कृषाणगी गोएनका
- कक्षा ९ए

जनवरी और दिसंबर की दोस्ती

कितना अजीब है ना,
दिसंबर और जनवरी का रिश्ता?
जैसे पुरानी यादें और नए वादें का किस्सा।
दोनों काफ़ी नाज़ुक है,
दोनो में गहराई है,
दोनों वक़्त के राही है,
दोनों ने ठोकर खायी है।

यूँ तो दोनों का है,
वही चेहरा,वही रंग,
उतनी ही तारीखें और
उतनी ही ठंड।
पर पहचान अलग है दोनों की
अलग है अंदाज़,
अलग हैं उनका ढंग।

एक अन्त है,

तो एक शुरुआत।
जैसे रात से सुबह,
और सुबह से रात।

एक में याद है,
दूसरे मे आस,
एक को है तजुर्बा,
दूसरे को है विश्वास।

दोनों जुड़े है ऐसे,
धागे के दों छोर जैसे,
पर देखो दूर रहकर भी
साथ निभाते है ये कैसे।

जो दिसंबर छोड़ के जाता है,
उसे जनवरी अपनाता है,
और जो जनवरी के वादें है
उन्हें दिसम्बर निभाता है।

कैसे जनवरी से
दिसम्बर के सफर में
११ महीने लग जाते है,
लेकिन दिसम्बर से जनवरी बस
१ पल मे पहुँच जाते है!

जब ये दूर जाते है,
तब हाल बदल देते है,
और जब पास आते है
तो साल बदल देते है।

देखने में ये साल के महज़
दो महीने ही तो लगते है,
लेकिन,
सब कुछ बिखेरने और समेटने
का वो कायदा भी रखते है।

दोनों ने मिलकर ही तो
बाकि महीनों को बाँध रखा है।
अपनी जुदाई को
दुनिया के लिए
एक त्यौहार बनाए रखा है!

- तमन्ना झावर।
कक्षा ७दी

कंप्यूटर का महत्व

मेरे पास एक बेहतरीन कंप्यूटर है, जो मेरी नानी ने एक साल पहले तोहफे के रूप में मुझे दिया था। वह बहुत अच्छी तरह से चलता है और दिखने में भी काफ़ी रंगीला है।

एक कंप्यूटर की बहत सी विशेषताएँ होती है। वह हमें ज्ञान देती है। अगर हम उसपर कुछ भी खोज करते है तो हमें अनेक विकल्प मिले जाते है। कंप्यूटर ने सबकी ज़िंदगी आरामदायक बना दी है। वह हमें खाना-पीना, फल, सब्ज़ी, कपड़े और बहुत कुछ मँगवाने का विकल्प देती है। बहुत लोग कंप्यूटर पर घर से काम करते हैं और इन्हें बिना इधर -उधर घूमे, आय मिल सकती हैं। जब कोरोना महामारी हमारे दुनिया में फ़ैल गयी थी, तब सब घर बैठे कंप्यूटर पर कार्य कर रहे थे। बच्चों की पढ़ाई, गूगल की कक्षा की मदद से होती थी। कभी-कभी कंप्यूटर के माध्यम से हम दादा-दादी और माता-पिता की मदद कर सकते है। कंप्यूटर के सहारे हम मौसम का हाल-चाल, पता, आदि भी जान सकते हैं।

कंप्यूटर ने हमारी ज़िंदगी को बहुत आसान बना दिया है। इस ज़माने में यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण बन चुका है। अंतः मुझे मेरा कंप्यूटर बहुत पसंद हैं।

- वृद्धि बंसल
कक्षा ८बी